बाब अर्स अजीम का मता जाहेर किया याने एक जवेर का अर्स

गैब बातें बका अर्स की, कहूं सुनी न एते दिन।
हम आए अर्स अजीम से, करें जाहेर हक वतन।। १ ।।

अखण्ड परमधाम का छिपा गूढ़ रहस्य आज दिन तक किसी ने नहीं सुना था। हम रूहें अब परमधाम से आई हैं, इसलिए उस अखण्ड परमधाम की हकीकत जाहिर करते हैं।

दुनियां चौदे तबक की, सब दौड़ी बुध माफक।
सुरिया को उलंघ के, किन पाया न बका हक।। २ ।।

चौदह तबकों की दुनियां ने उस अखण्ड परमधाम की अपनी बुद्धि से खूब खोज की, परन्तु ज्योति स्वरूप (आदि नारायण) को उलंघकर (पार करके) कोई अखण्ड में जा नहीं सका।

पढ़ पढ़ वेद कतेब को, नाम धरे आलम।
एती खबर किन ना परी, कहां साहेब कौन हम।। ३ ।।

वेद और कतेब को पढ़-पढ़कर दुनियां के लोगों ने अपने आपको ज्ञानी, मौलवी, आलम फाजल घोषित किया, परन्तु उनको इतनी भी सुध नहीं आई कि पारब्रह्म कहां है और वह स्वयं कौन है?

ऊपर तले माहें बाहेर, ए जो कादर की कुदरत।
सो कादर काहू न पाइया, जिनके हुकमें ए होवत।। ४ ।।

ऊपर-नीचे, अन्दर-बाहर यह सब अक्षर ब्रह्म की योगमाया का बनाया संसार है। जिनके हुकम से यह संसार बनता और मिटता है, उस अक्षर ब्रह्म को भी आज दिन तक कोई पा नहीं सका।

ए गुझ भेद जो गैब का, पाया न चौदे तबक।
कथ कथ सब खाली गए, पर छूटी न काहू सक।। ५ ।।

अखण्ड के पीछे छिपे भेदों का रहस्य इन चौदह लोकों में कोई नहीं पा सका। सब वर्णन करते रहे पर संशय किसी के नहीं मिटे।

ए तले ला मकान के, चार चीजें जिमी आसमान।
ज्यों कबूतर खेल के, आखिर फना निदान।। ६ ।।

निराकार के नीचे यह संसार है। जमीन और आसमान के बीच पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु का ही बना संसार है और जैसे खेल के कबूतर मिट जाते हैं उसी तरह यह संसार भी मिट जाने वाला है।

मोहे मेहेर करी रूहअल्ला ने, कुन्जी अर्स की ल्याए।
अर्स बका पट खोल के, इलम दिया समझाए।। ७ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि मेरे ऊपर रूह अल्लाह श्री श्यामा महारानी (श्री देवचन्द्रजी) की कृपा हुई जो उन्होंने तारतम ज्ञान की कुन्जी लाकर दी और जागृत बुद्धि के ज्ञान से अखण्ड परमधाम की पहचान करा दी।

Nijanand App

गिरो उतरी लैलत कदर में, कह्या तिनमें का है तूं।
खोल दे पट अर्स का, ज्यों आए मिले तुझको।। ८ ।।

श्री राजजी ने मुझे कहा कि इस मोहतत्व के संसार में परमधाम की आत्माएं खेल देखने उतरी हैं। तुम भी उनमें से एक हो। तुम उन सब रूहों को परमधाम की पहचान जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से करा दो, ताकि वह सब तुम्हें आकर मिलें।

जो अरवाहें अर्स की, सो आए मिलेंगी तुझ।
तुझ अन्दर मैं आइया, ए केहे फुरमाया मुझ।। ९ ।।

परमधाम की सब आत्माएं आकर तुम्हें मिलेंगी। तुम्हारे अन्दर मैं बैठूंगा। ऐसा उन्होंने मुझसे कहा।

किन कायम अर्स न पाइया, ए गुझ रही थी बात।
अब तू उमत जगाए अर्स की, बीच बका हक जात।। १० ।।

आज दिन तक किसी को अखण्ड परमधाम का पता नहीं था। इसमें गुझ भेद (रहस्य) छिपे थे। अब तुम परमधाम की रूहों को जागृत बुद्धि के ज्ञान से जगाकर ले आओ।

और करी मेहेर महंमदें, अंदर बैठे आए।
कई विध करी बका रोसनी, सो इन जुबां कही न जाए।। ११ ।।

और श्री श्यामा महारानी ने भी कृपा की और मेरे अन्दर आकर बैठ गए। कई तरह से अखण्ड परमधाम के छिपे भेदों को जाहिर किया जो इस जबान से कहे नहीं जा सकते।

चौदे तबक कर कायम, भिस्त द्वार दीजो खोल।
मैं साहेब के हुकम से, अव्वल किया है कौल।। १२ ।।

श्री महामति कहते हैं कि अब मैं धनी के हुकम से, जो उन्होंने पहले से कुरान में कौल (वादा) किया था कि मैं रूहों के वास्ते आऊंगा और अपनी रूहों से चौदह तबकों को अखण्ड कराऊंगा, सब जाहिर कर रही हूं।

सो ढूंढों प्यारी उमत, मेरे हक जात निसबत।
जो रूहें भूली वतन, ताए देऊं हक बका न्यामत।। १३ ।।

उनके हुकम के अनुसार मैं अपनी प्यारी आत्माओं को खोज रही हूं। यह मेरे श्री राजजी महाराज की अंगनाए हैं जो खेल में आकर अखण्ड घर को भूल गई हैं। उनको अखण्ड परमधाम की न्यामत देती हूं।

निमूना इन जिमी का, हक को दिया न जाए।
पर कछुक तो कहे बिना, गैब की क्यों समझाए।। १४ ।।

इस झूठी जमीन की किसी वस्तु का नमूना सत को नहीं दिया जा सकता, परन्तु जब तक कुछ कहा न जाए तब तक अखण्ड की छिपी बातें कैसे समझ में आएंगी?

ज्यों जड़ाव एक मोहोल है, जवेर जड़े कई संग।
कुंदन माहें सोभित, नए नए अनेक रंग।। १५ ।।

जैसे एक जड़ाव का महल है और उसमें कुन्दन के साथ कई जड़ाव जड़े हैं। उसमें नए-नए रंगों की तरंगें निकलती हैं।

Nijanand App

ए सब एक जवेर का अर्स है, तामें कई तरंग उठत।
जुदे जुदे रंगों झरोखे, अनेक भांत झलकत।। १६ ।।

उसी तरह पूरा परमधाम एक जवाहरात का है और उसमें कई तरह के रंगों की तरंगें उठती हैं। अलग-अलग रंगों के झरोखे झलकार करते हैं।

अनेक रंग थंभन में, अनेक सीढ़ियां पड़साल।
कई रंग भोम चबूतरे, कई रंग द्वार दिवाल।। १७ ।।

अनेक रंग की सीढ़ियां, थंभ और पड़सालें हैं। धाम के चबूतरों की दीवार और दरवाजों में कई तरह के रंग शोभा देते हैं।

इन विध समझो अर्स को, एक जवेर कई रंग।
द्वार दिवालें पड़सालें, और थंभों उठत तरंग।। १८ ।।

इस तरह से सारे परमधाम को एक जवेर के कई रंगों का महल समझो। यहां के दरवाजे, दीवारें, पड़सालें और थंभों में कई तरह की तरंगें उठती हैं।

जित जैसा रंग चाहिए, तहां तैसा ही देखत।
ना समारे नए किन, ना पुराने पेखत।। १९ ।।

जहां जैसा रंग चाहिए, वहां उसी तरह की शोभा है। किसी ने वहां नया बनाया नहीं और पुराना देखा नहीं।

जवेर जुदे जुदे सोभित, अनेक रंग अपार।
एक जवेर को अर्स है, ज्यों रंग रस बन विचार।। २० ।।

अनेक रंगों के अलग-अलग जवेरों की बेशुमार शोभा है। इस तरह से परमधाम एक जवेर का है। जैसे एक वन में अनेक रंगों का रस होता है ऐसे ही परमधाम को विचारना।

बन सबे एक रस हैं, कई रंग बिरिख अनेक।
रंग रस स्वाद जुदे जुदे, कहां लो कहूं विवेक।। २१ ।।

वन सब एक रस हैं पर वृक्ष अनेक रंगों के होते हैं। वृक्षों के रंग, रस, स्वाद अलग-अलग होते हैं। ऐसा ही परमधाम है।

हर जातें कई बिरिख हैं, रंग रस निरमल नेक।
स्वाद अलेखे अपार हैं, पर असल बन रस एक।। २२ ।।

यहां परमधाम में हर जाति के कई वृक्ष हैं जिनके रंग, रस और स्वाद बेशुमार हैं, परन्तु वन सब एक सा ही है।

गिरद अर्स के देखिया, जहां लो नजर पोहोंचत।
एकल छत्री बन की, छेदर ना गेहेरा कित।। २३ ।।

रंग महल के चारों तरफ देखा तो जहां तक नजर जाती है वनों की छाया एक जैसी दिखाई देती है न कहीं छेद है और न ही कहीं घनी है।

Nijanand App

ज्यों जड़ाव एक चंद्रवा, जवेर जड़े कई विध।
बन बेली कटाव कई, सोभित सोने की सनंध।। २४ ।।

जैसे एक चन्द्रवा में अनेक जवेर जड़े हों, उसी तरह वन की बेलों के कटाव सोने की तरह से वृक्षों की छतरी में शोभा देते हैं।

अनेक रंगों के जवेर, जो जिन संग सोभित।
तिन ठौर बने तिन मिसलें, कई हुए कटाव जुगत।। २५ ।।

परमधाम में अलग-अलग रंगों के जवेर जहां अच्छे लगते हों उस ठिकाने पर उसी ढंग से वनों में पेड़ों की छत्री शोभा देती है।

एक जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं अकास।
तिन जिमी के जवेर को, क्यों कर कहूं प्रकास।। २६ ।।

परमधाम की जमीन के एक कण की रोशनी आसमान में नहीं समाती, तो जमीन के जवेर के तेज का कैसे वर्णन करूं?

एह चंद्रवा बन का, नूर रोसन गिरदवाए।
तले जिमी अति रोसनी, ऊपर बन सोभाए।। २७ ।।

इस वन के चन्द्रवे का नूर चारों तरफ़ परमधाम में फैला है। नीचे जमीन की रोशनी और ऊपर वन की शोभा है।

जरे जरा सब नूर में, छज्जे दिवाल सब नूर।
जिमी बन बीच आकास में, मावत नहीं जहूर।। २८ ।।

परमधाम का कण-कण सब नूरी है। छज्जे और दीवार भी सब नूर के हैं, जिनका तेज जमीन पर, वन में और आकाश में नहीं समाता।

सोभा जानवर अर्स के, ताके एक बाल की रोसन।
मावत नहीं आकास में, जुबां क्या करे सिफत इन।। २९ ।।

परमधाम के जानवर के एक बाल की रोशनी आकाश में नहीं समाती तो फिर वहां के जानवर की सिफत कैसे बयान करूं?

सिफत न होए एक बाल की, तो क्यों होए सिफत वजूद।
ए केहेनी में न आवत, तो क्यों कहे जुबां नाबूद।। ३० ।।

जब जानवर के एक बाल की सिफत नहीं होती तो उसके तन की सिफत कैसे होगी? संसार की झूठी जबान से यह कहना सम्भव नहीं है।

एक बाल न गिरे पसुअन का, न खिरे पंखी का पर।
पात पुराना ना होवहीं, अर्स जंगल या जानवर।। ३१ ।।

परमधाम में पशु का एक बाल नहीं गिरता और न पक्षी का पर गिरता है। यहां का पत्ता पुराना नहीं होता। इसी तरह जंगल और जानवर भी नए-पुराने नहीं होते।

Nijanand App

इन जिमी के जानवर, ताए देखत हक नजर।
ए दिल में तो आवहीं, जो रूह देखे विचार कर।। ३२ ।।

इस जमीन के जानवरों को पारब्रह्म श्री राजजी महाराज अपनी नजर से देखते हैं। अगर यहां रूहें विचार करके देखें तो यह बात समझ में आए।

पार न खूबी खुसबोए को, पार ना पसु पंखियन।
मीठी बानी अति बोलत, अंग सोभित चित्रामन।। ३३ ।।

यहां के पशु-पक्षियों की खूबी और सुगन्धि का बयान नहीं हो सकता। यह पशु-पक्षी सुन्दर मीठी बोली बोलते हैं और इनके अंगों पर सुन्दर चित्र बने हैं।

सोभा क्यों होए रंग सुरंग की, नैन श्रवन चोंच बान।
सुख देवें कई भांत सों, कई बोलें मीठी जुबान।। ३४ ।।

इन पशु-पक्षियों के नेत्र, कान, चोंच, बोली अच्छे लगते हैं। इनके गहरे रंगों की शोभा कैसे कही जाए? यह अपनी मीठी जबान से कई सुख देते हैं।

एक हक को हंसावें खेल के, कई हंसावें मुख बोल।
कोई नाहीं निमूना इनका, जो दीजे इनकी तौल।। ३५ ।।

यह श्री राजजी महाराज को खेलकर हंसाते हैं। कई अपनी बोली बोलकर हंसाते हैं। इनकी कोई तुलना नहीं है जो उपमा दी जाए।

सोभा लेत जिमी जंगल, माहें टोले कई खेलत।
ए खूब खेलौने हक के, ए बुजरक इन निसबत।। ३६ ।।

यहां के जमीन और जंगल में पशु-पक्षी टोले-टोले खेलकर शोभा बढ़ाते हैं। यह श्री राजजी महाराज के खिलौने हैं। ऐसी बड़ी महिमा इनकी है।

कई पिउ पिउ कर पुकारहीं, कई करें खसम खसम।
कई धनी धनी मुख बोलहीं, कई कहें भी तुम भी तुम।। ३७ ।।

कई पशु-पक्षी 'पिया-पिया', 'खसम-खसम', 'धनी-धनी' 'तुम ही तुम' कहकर बोलते हैं।

इन विध मैं केते कहूं, बोलें जुबां अनेक।
पर सबों एही जिकर, कहें मुख वाहेदत एक।। ३८ ।।

यह पशु-पक्षी अनेक तरह की बोलियां बोलते हैं जिसका बयान मैं कैसे करूं? सबकी जबान पर एक ही श्री राजजी महाराज का जिक्र रहता है, क्योंकि सब उन्हीं के अंग हैं।

घास करत है सिजदा, करें सिजदा दरखत।
तो क्यों न करें चेतन, यों फुरमान फुरमावत।। ३९ ।।

परमधाम में घास, पेड़ सभी सिजदा करते हैं तो फिर चेतन पशु-पक्षी क्यों न करें? ऐसा कुरान में लिखा है।

घास पसु सब नूर के, जिमी जंगल सब नूर।
आसमान सितारे नूर के, क्यों कहूं नूर चांद सूर।। ४० ।।

घास, पशु, जंगल, जमीन, आसमान, सितारे, चन्द्रमा, सूर्य सब एक ही नूर के हैं।

Nijanand App

आगूं जरे घास अर्स के, ख्वाब हैवान इन्सान।
क्यों दीजे निमूना झूठ का, कायम जिमी जरा रेहेमान।। ४१ ।।

परमधाम की जरा सी घास के आगे झूठी दुनियां के इन्सान या जानवरों की तुलना नहीं हो सकती, क्योंकि यहां के इन्सान और जानवर मिट जाने वाले हैं और परमधाम का जर्रा-जर्रा अखण्ड है और श्री राजजी का ही अंग है।

इत जरा छोटा बड़ा नूर का, या हौज जोए मोहोलात।
अर्स जरे की इन जुबां, सिफत न कही जात।। ४२ ।।

यहां छोटा-बड़ा, कण, हौज कौसर तालाब, जमुनाजी और मोहोलातें सभी नूर की हैं। यहां के कण की सिफत इस जबान से कहने में नहीं आती।

आगूं द्वार अर्स के, चौक बन्या चबूतर।
कबूं हक तखत बैठहीं, आगे खेलें जानवर।। ४३ ।।

रंग महल के दरवाजे के आगे चांदनी चौक में दो चबूतरे बने हैं। श्री राजजी कभी-कभी आकर यहां तख्त पर बैठते हैं और आगे जानवर मुजरा दिखाते हैं।

कई कदेलें कुरसियां, ऊपर रूहें बैठत।
सुमार नहीं पसु पंखियों, कई विध खेल करत।। ४४ ।।

चबूतरों पर गद्दे और कुर्सियां रखी हैं जिन पर रूहें बैठती हैं। पशु-पक्षी यहां पर बेशुमार खेल खेलते हैं।

इन दरगाह की रूहन सों, दोस्ती हक की हमेसगी।
इन जुबां सों सिफत, क्यों होवे इनकी।। ४५ ।।

परमधाम की रूहों से श्री राजजी महाराज की अखण्ड दोस्ती है। जिसकी सिफत यहां की जबान से कैसे करूं?

जो नजीकी निस दिन, हक हादी हमेस।
क्यों कहूं अर्स अरवाहों को, ए जो कायम खुदाई खेस।। ४६ ।।

यह सदा ही रात-दिन श्री राजजी महाराज के चरणों में रहने वाले हैं। ऐसी परमधाम की रूहों का जो सदा के सम्बन्धी हैं, कैसे बयान करूं?

सोभा जाए न कही रूहन की, जो बड़ी रूह के अंग नूर।
कहा कहे खूबी इन जुबां, जो असल जात अंकूर।। ४७ ।।

रूहों की शोभा नहीं कही जाती। यह श्यामा महारानी के अंग का नूर है। असल जात श्री श्यामा महारानीजी श्री राजजी के अंग हैं। उनकी खूबी का कैसे बयान करें?

अब देखो अंतर विचार के, कैसा सुन्दर सरूप रूहन।
किन विध खूबी रूहन की, क्यों वस्तर क्यों भूखन।। ४८ ।।

अब आत्मा से विचारकर देखो कि रूहों का कैसा सुन्दर स्वरूप है और उनके वस्त्र और आभूषणों की कैसी सुन्दर शोभा है।

Nijanand App

देखो कौन सरूप बड़ी रूह का, आपन रूहें जाको अंग।
हक प्याले पिलावत, बैठाए के अपने संग।।४९।।

श्री श्यामा महारानी जिनकी हम रूहें अंग हैं, उनके स्वरूप को देखो। उनको श्री राजजी महाराज अपने साथ बिठाकर इश्क के प्याले पिलाते हैं।

कायम हमेसा बुजरकी, सिरदार इन रूहन।
ए जुबां झूठे वजूद की, क्यों करे सिफत इन।।५०।।

इन रूहों की तथा इनके सिरदार (प्रधान) श्यामा महारानी की साहिबी हमेशा अखण्ड है। संसार की यह झूठी जबान इस महिमा का बयान कैसे करे?

ए सिरदार कदीम रूहन के, हक जात का नूर।
तिन नूर को नूर सबे रूहें, ए वाहेदत एकै जहूर।।५१।।

श्यामा महारानी श्री राजजी के ही नूर के अंग हैं जो सदा से रूहों की सिरदार हैं। उन श्यामा महारानी के नूर से ही सभी रूहें हैं और इस तरह से यह परमधाम की वाहेदत है, एकदिली है।

अर्स जरे की सिफत को, पोहोंचत नहीं जुबान।
तो अर्स रूहें सिरदार की, क्यों होवे सिफत बयान।।५२।।

परमधाम के एक कण की सिफत को यहां की जबान बयान नहीं कर पाती, तो फिर परमधाम की रूहों या श्यामा महारानीजी की सिफत कैसे कही जाए?

इन अर्स का खावंद, ताकी सिफत होवे क्यों कर।
एह जुबां क्यों केहेवहीं, इन अकल की फिकर।।५३।।

तो फिर परमधाम के धनी श्री राजजी महाराज की सिफत कैसे कही जाए? यह जबान, अक्ल तथा सोच तो झूठे संसार की है। यह कैसे बयान करे?

सूरत हक के जात की, सिफत करूं मुख किन।
जुबां न पोहोंचे जरे लग, तो कैसा सब्द कहूं इन।।५४।।

हक जात मोमिनों की शोभा (सिफत) किस मुंह से कहूं? यहां की जबान एक कण की शोभा का वर्णन करने में असमर्थ है, तो फिर मोमिनों की शोभा का बयान कैसे करूं?

सिफत हक सूरत की, क्योंए न आवे जुबांए।
कछू लज्जत तो पाइए, जो आवे फैल हाल माहें।।५५।।

श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार की शोभा का तो वर्णन हो ही नहीं सकता। यदि हम रहनी में आ जाएं तो कुछ लज्जत मिल सकती है।

कैसा सरूप है हक का, जो इन सबों का खावंद।
क्यों देऊं निमूना इनका, इन जुबां मत मंद।।५६।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप कैसा है? यह सारे परमधाम के धनी हैं। उनका नमूना यहां की मन्द बुद्धि और जबान से कैसे कहूं?

Nijanand App

सोभा सुन्दरता जात की, एक हक जात सूरत।
अंतर आंखें खोल तूं, अपनी रूह की इत।।५७ ।।

हक जात जो ब्रह्मसृष्टियां है उनके स्वरूप और शोभा सुन्दर हैं। मेरी आत्मा! अपने अन्दर की आंखें खोलकर यहां देख।

रहे ठाढ़ी इन जिमी पर, देख अपना खसम।
देख मिलावा अर्स का, और देख अपनी रसम।।५८ ।।

इस जमीन पर खड़े होकर अपने खसम को देखो और अपने साथी रूहों को और लीला को देखो।

देख तले तरफ जिमीय के, उज्जल जोत अपार।
बन रोसन भरया आसमान लों, किरना नहीं सुमार।।५९ ।।

परमधाम की जमीन को देखो। यह उज्ज्वल है। इसका तेज अपार है। यहां के वन की रोशनी की किरणें बेशुमार हैं जिनकी रोशनी आकाश तक फैली है।

ऊपर देख तरफ बन के, फल फूल बेली रंग रस।
कहूं जड़ाव ज्यों चंद्रवा, कई कटाव कई नकस।।६० ।।

वन के ऊपर फल, फूल, बेलों के रंग, रस देखिए। यह ऐसे लगते हैं जैसे एक चन्द्रवा में बेशुमार कटाव और नक्शकारी जड़ी हो।

चारों तरफों चंद्रवा, अर्स के यों कर।
दौड़ दौड़ के देखिए, आवत यों ही नजर।।६१ ।।

रंग महल के चारों तरफ वृक्षों की डालें और पत्तों का ऐसा चन्द्रवा है कि दौड़-दौड़कर देखें तो सब जगह दूर-दूर तक ऐसा ही दिखाई देता है।

फेर फेर बन को देखिए, भांत चन्द्रवा जे।
केहे केहे फेर पछतात हों, ऐसे झूठे निमूना दे।।६२ ।।

बार-बार वन की तरफ जब देखते हैं जो चन्द्रवा की तरह है, तो उसे कोई झूठा नमूना देने से पछताना पड़ता है।

एक जरा कायम देखिए, उड़े चौदे तबक वजूद।
सिफत अर्स की क्यों करे, ए जुबां जो नाबूद।।६३ ।।

अखण्ड परमधाम का एक कण भी चौदह लोकों के संसार को उड़ा देता है, तो यहां की मिटने वाली जबान अखण्ड परमधाम की महिमा का कैसे बयान करे?

कहे सूरज सोना जवेर, ख्वाब में बुजरक ए।
क्यों पोहोंचे निमूना झूठ का, अर्स कायम हक के।।६४ ।।

स्वप्न के संसार के सूर्य, सोना और जवेर झूठे हैं। इनका नमूना अखण्ड परमधाम के सत्य को कैसे दिया जाए?

Nijanand App

ए मैं देख दुख पावत, दिल में विचारत यों।
जो कदी यों जान बोलों नहीं, तो कहे बिना बने क्यों।। ६५ ।।

मैं ऐसा देख-देखकर चित्त में विचारती हूं और सोचती हूं कि यदि बयान नहीं करूं तो कहे बिना रूहें जागृत कैसे होंगी?

इन कहे होत है रोसनी, रूह पावत है सुख।
और इस्क अंग उपजे, हक सों होत सनमुख।। ६६ ।।

परमधाम का बयान करने से रूहों को सुख मिलता है और उनके अंग में इश्क पैदा होता है। अपने अनुभव से सब श्री राजजी महाराज के सम्मुख जाती हैं।

उमंग अंग में रोसनी, अलेखे उपजत।
इन कहे अरवाहें अर्स की, अनेक सुख पावत।। ६७ ।।

रूहों के अंग में यह चर्चा सुनकर बेशुमार उमंग पैदा होती है। इसका वर्णन करने से उन्हें अपार सुख होता है।

जित जित देखों नजरों, हक जिमी अर्स वतन।
कहे सेती कई कोट गुना, आवत अन्दर रोसन।। ६८ ।।

परमधाम में श्री राजजी महाराज को, जमीन को और घर को नजर फिराकर जैसे-जैसे देखें, तो कहने से करोड़ गुना आनन्द अनुभव में आता है।

कई कोट गुना बढ़त है, बड़ा नफा रूह जान।
बढ़त बढ़त हक अर्स की, आवत इस्क पेहेचान।। ६९ ।।

ऐसा आनन्द लगातार रूहों के अन्दर करोड़ों गुना बढ़ता रहता है। श्री राजजी महाराज, परमधाम और इश्क की पहचान होती है।

इन कहे से ऐसा होत है, पीछे आवत फैल हाल।
तो ख्वाब में कायम अर्स का, सुख लीजे नूरजमाल।। ७० ।।

वर्णन करने से कहनी और रहनी आती है और फिर झूठे संसार में श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम के सुख अनुभव में आते हैं।

ए मेहेर देखो मेहेबूब की, बड़ी रूह भेजी इत।
इन जिमी रूहें जगाए के, कर दई ए निसबत।। ७१ ।।

श्री राजजी महाराज की इस कृपा को देखो कि उन्होंने श्यामा महारानी को यहां भेज दिया, जिन्होंने रूहों को जागृत करके परमधाम की हकीकत की पहचान कराई।

ए हक का दिया पाइए, कौल फैल या हाल।
ए साहेब कायम देवहीं, केहेनी अर्स कमाल।। ७२ ।।

श्री राजजी महाराज के देने से ही यहां कहनी और रहनी बनती है। यह श्री राजजी महाराज ही अखण्ड सुख देने वाले हैं। यह महान बात कहने से ही समझ में आती है।

Nijanand App

जब केहेनी आई अंग में, तब फैल को नाहीं बेर।
फैल आए हाल आइया, लेत कायम रोसनी घेर।।७३ ।।

जब अंग में कहनी आ जाती है, तो करनी आने में देर नहीं लगती। करनी जब आ गई तो रहनी आ जाती है और रूहें परमधाम के सुखों का अनुभव करती हैं।

तले से ऊपर चढ़त है, जिमी की रोसन।
और जिमी पर उतरत है, ऊपर का नूर बन।।७४ ।।

परमधाम की जमीन की ज्योति नीचे से ऊपर आसमान तक जाती है। ऊपर से वनों के नूर की रोशनी नीचे जमीन पर उतरती है।

देखों जहां जहां दौड़ के, इसी भांत बन छांहें।
जिमी बन नूर देख कें, सुख उपजत रूह माहें।।७५ ।।

जहां-जहां भी दौड़कर देखो वन की इसी तरह छाया है। जमीन और वन दोनों के तेज को देखें तो आत्मा को बहुत आनन्द मिलता है।

ए बाग गिरद अर्स के, और एही गिरदवाए जोए।
एही बाग गिरद हौज के, सब नूर पूर खुसबोए।।७६ ।।

रंग महल के चारों तरफ बड़े वन के बगीचे आए हैं और यही बगीचे जमुनाजी को और हौज कौसर तालाब को घेरकर आए हैं। सबके सब तेज और खुशबू से भरपूर हैं।

जिमी भी सब एक रस, तिनमें कई जुगत।
जित जैसा रंग चाहिए, तित तैसा ही देखत।।७७ ।।

जमीन सब जगह एक सी है। उसमें भी कई तरह की शोभा बनी है। जहां जैसा रंग चाहिए वहां वैसा ही दिखाई देता है।

रेत किनारे जोए पर, और रेत जिमी पर जेती।
ताल पाल कई मोहोलों पर, कहूं जल खूबी केती।।७८ ।।

जमुनाजी के किनारे की रेत जमीन की रेत, हौज कौसर तालाब, ताल की पाल के महलों की तथा जल की खूबी कैसे और कहां तक कहूं?

पहाड़ जवेर केते कहूं, तले बीच ऊपर।
कई जवेर कई रंग के, क्यों कहूं सोभा सुन्दर।।७९ ।।

पहाड़ों में जवेर नीचे, बीच और ऊपर शोभा देते हैं और कई-कई रंग के हैं। उनकी शोभा और सुन्दरता कैसे कहूं?

एही जिमी नूरजलाल की, जिन जानो बाग और।
याही जवेर को मन्दिर, ताथें एक रस सब ठौर।।८० ।।

ऐसे ही जमीन, बाग, बगीचे, जवेर, मन्दिर सब एक समान अक्षर ब्रह्म के भी हैं। इनको अलग मत समझो।

Nijanand App

न समारव्या अर्स को, न किए नूर मन्दिर।
न किए हौज जोए को, न पर्वत बन जानवर।। ८१ ।।

परमधाम और अक्षरधाम को किसी ने बनाया या संवारा नहीं है। इसी तरह से हौज कौसर, तालाब, जमुनाजी, पहाड़, वन और जानवरों को भी किसी ने बनाया या संवारा नहीं है।

न समारी जिमी जल को, न आकास चांद सूर।
वाओ तेज सब हक के, हैं कायम हमेसा नूर।। ८२ ।।

जमीन, जल, आकाश, चन्द्रमा, सूर्य, हवा, अग्नि सभी श्री राजजी महाराज के अखण्ड नूर हैं। उन्हें किसी ने बनाया नहीं है।

है नूर सब नूरजमाल को, फरिस्ते नूर सिफात।
रूहें नूर बड़ीरूह को, ए सब मिल एक हक जात।। ८३ ।।

श्री राजजी महाराज के नूर से ही अक्षर ब्रह्म तथा सभी फरिश्ते, रूहें, बड़ी रूह श्यामाजी हैं और यह सब मिलकर हक जात (श्री राजजी महाराज के अंग) कहलाते हैं।

दूसरा इत कोई है नहीं, एकै नूरजमाल।
ए सब में हक नूर है, याही कौल फैल हाल।। ८४ ।।

यहां श्री राजजी महाराज के अतिरिक्त और कोई नहीं है। सबके अन्दर श्री राजजी महाराज की ही कहनी, करनी और रहनी का नूर है।

महामत कहे ए मोमिनों, जो अरवा अर्स अजीम।
इस्क प्याले लीजियो, भर भर नूर हलीम।। ८५ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मोमिनो! तुम परमधाम की रूहें हो। श्री राजजी महाराज के इश्क के प्याले को लेकर भर-भर कर पिओ।

|| प्रकरण || ३२ || चौपाई || १७८७ ||

खिलवत में हांसी फरामोसी दई

अब देखो अन्दर अर्स के, रूहें बैठी बारे हजार।
उतरी लैलत-कदर में, खेल देखन तीन तकरार।। १ ।।

परमधाम के अन्दर देखो। मूल-मिलावे में बारह हजार रूहें बैठी हैं। यह रूहें माया के भवसागर को देखने के वास्ते तीन बार माया में उतरी हैं।

वास्ते हांसी के मने किए, किया हांसी को दिल हुकम।
तो हांसी को दिल उपज्या, मांग्या हांसी को खेल खसम।। २ ।।

श्री राजजी महाराज ने हंसी के वास्ते ही मना किया और हंसी के वास्ते ही हुकम के द्वारा रूहों के दिल में खेल की चाह पैदा की। रूहों के दिल में खेल देखने की चाह उपजाई तो रूहों ने यह खेल मांगा।

ए देखो भोम तले की, बैठा हक मिलावा जित।
आप अर्स में अरवाहों को, खेल मेहेर का दिखावत।। ३ ।।

अब प्रथम भोम में देखो जहां श्री राजजी महाराज के चरणों में सखियां मिलकर बैठी हैं और आप श्री राजजी महाराज रूहों को परमधाम में कृपा करके खेल दिखला रहे हैं।

Nijanand App